وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى ٱلْكِتَٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنۢ بَعْدِهِۦ بِٱلرُّسُلِ ۖ
وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ ۗ
أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُولٌۢ بِمَا لَا تَهْوَىٰٓ أَنفُسُكُمُ ٱسْتَكْبَرْتُمْ
فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ٨٧ وَقَالُوا۟ قُلُوبُنَا غُلْفٌۢ ۚ بَل
لَّعَنَهُمُ ٱللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ٨٨ وَلَمَّا جَآءَهُمْ
كِتَٰبٌ مِّنْ عِندِ ٱللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا۟ مِن قَبْلُ
يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَلَمَّا جَآءَهُم مَّا عَرَفُوا۟
كَفَرُوا۟ بِهِۦ ۚ فَلَعْنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلْكَٰفِرِينَ ٨٩ بِئْسَمَا ٱشْتَرَوْا۟
بِهِۦٓ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا۟ بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ ٱللَّهُ
مِن فَضْلِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ فَبَآءُو بِغَضَبٍ عَلَىٰ
غَضَبٍ ۚ وَلِلْكَٰفِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٩٠ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ءَامِنُوا۟
بِمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ قَالُوا۟ نُؤْمِنُ بِمَآ أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا
وَرَآءَهُۥ وَهُوَ ٱلْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنۢبِيَآءَ
ٱللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ٩١ ۞ وَلَقَدْ جَآءَكُم
مُّوسَىٰ بِٱلْبَيِّنَٰتِ ثُمَّ ٱتَّخَذْتُمُ ٱلْعِجْلَ مِنۢ بَعْدِهِۦ وَأَنتُمْ
ظَٰلِمُونَ ٩٢ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَٰقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ ٱلطُّورَ
خُذُوا۟ مَآ ءَاتَيْنَٰكُم بِقُوَّةٍ وَٱسْمَعُوا۟ ۖ قَالُوا۟ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأُشْرِبُوا۟ فِى قُلُوبِهِمُ ٱلْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم
بِهِۦٓ إِيمَٰنُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ٩٣ قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ

ٱلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ عِندَ ٱللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ ٱلنَّاسِ فَتَمَنَّوُاْ
ٱلْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ
ٱلنَّاسِ عَلَىٰ حَيَوٰةٍ وَمِنَ ٱلَّذِينَ أَشْرَكُواْ ۚ يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ
أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِۦ مِنَ ٱلْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ ۗ وَٱللَّهُ
بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

| **Theme** | |
|---|---|
| Advent of the Prophet Isa (Jesus). Jews rejected the truth knowingly. Nature of the Jews' belief. Their love for the calf was more than their love for Allah. Jews' claim of exclusive right to inherit paradise is put to test. | हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम (यसू') की आमद, यहूदियों की जानिब से जानबूझ कर हक़ का इनकार, यहूदियों के अकीदे की नौइयत, अल्लाह की मुहब्बत पर बछड़े की मुहब्बत का ग़ालिब हो जाना, और जन्नत के वारिस होने के ख़ुसूसी हक़ से मुतअल्लिक़ यहूदियों के दावे को कसौटी पर परखा जाना। |
| **Tarjumani** | |
| Indeed, to Musa (Moses) We gave the Book (Torah) and sent after him other Rasools in succession; then We gave Isa (Jesus), the son of Maryam (Mary), clear Signs and strengthened him with the Holy Spirit (Gabriel). Why is it that | हमने मूसा को किताब दी, उसके बाद पै दर पै रसूल भेजे, आख़िरकार ईसा इब्ने-मरयम को रौशन निशानियाँ देकर भेजा और रूहे-पाक से उसकी मदद की | फिर यह तुम्हारा क्या ढंग है कि जब भी कोई रसूल तुम्हारी खाहिशाते-नफ्स के ख़िलाफ़ कोई |

| | |
|---|---|
| whenever there came to you a Rasool with a message which did not suit your desires, you became so arrogant that to some of them you called impostors and others you killed. They say: "Our hearts are in secure wrappers;" but the fact of the matter is that Allah has cursed them for their disbelief, so little is that which they believe. Now when there has come to them a Book from Allah confirming the Holy Books of Torah and Gospel which they already have even though before this they used to pray for the coming of the Prophet Muhammad to gain victory against the unbelievers when there came to them that which they very well recognize, they knowingly rejected it, Allah's curse is on such disbelievers. What a bad is that for which they have sold away their souls! They deny Allah's revelation merely because of their grudge, that Allah should send His grace (only on an Israelite rather | चीज़ लेकर तुम्हारे पास आया, तो तुमने उसके मुक़ाबले में सरकशी ही की, किसी को झुठलाया और किसी को क़त्ल कर डाला!— वे कहते हैं, हमारे दिल महफ़ूज़ हैं \| नहीं, अस्ल बात यह है कि उनके कुफ़्र की वजह से उनपर अल्लाह की फिटकार पड़ी है, इसलिए वे कम ही ईमान लाते हैं— और अब जो एक किताब अल्लाह की तरफ़ से उनके पास आई है, उसके साथ उनका क्या बर्ताव है? बावजूदे कि वह उस किताब की तस्दीक करती है जो उनके पास पहले से मौज़ूद थी, बावजूदे कि उसकी आमद से पहले वे ख़ुद कुफ्फार के मुक़ाबले में फ़तह व नुसरत की दुआएँ माँगा करते थे, मगर जब वह चीज़ आ गई, जिसे वे पहचान भी गए, तो उन्होंने उसे मानने से इनकार कर दिया \| ख़ुदा की लानत इन मुनकिरिन पर, कैसा बुरा ज़रीआ है जिससे ये अपने नफ्स की तसल्ली हासिल करते हैं कि जो हिदायत अल्लाह के नाज़िल की है उसको कबूल करने से सिर्फ़ इस ज़िद की बिना पर इनकार कर रहे हैं कि अल्लाह ने अपने फज्ल (वहय व रिसालत) से अपने जिस बन्दे को ख़ुद चाहा, नवाज़ दिया \| लिहाज़ा अब ये |

| | |
|---|---|
| than) on whom He pleases from His servants (Muhammad)! They have drawn on themselves wrath upon wrath, and for such disbelievers there is a disgraceful punishment. When they are asked to believe in what Allah has revealed, they reply: "We only believe in what Allah has sent to us (Torah), and we reject what is beside that," while it is the truth confirming their own scriptures! Well, ask them, "If you sincerely believe in what was sent to you, why did you kill the Prophets of Allah who were sent to you from amongst yourselves before? Indeed, Musa (Moses) came to you with clear Signs, no sooner was he away from you, than you committed evil by worshipping the calf. Remember, when We took a Covenant from you and We lifted the Mount of Toor over your heads saying: "Take what We have given you firmly and listen to Our Commandments." you replied: | ग़ज़ब बाला-ए-ग़ज़ब के मुस्तहिक हो गए हैं और ऐसे काफ़िरों के लिए सख्त जिल्लतआमेज़ सज़ा मुकर्रर है। जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ अल्लाह ने नाज़िल किया है उसपर ईमान लाओ तो वे कहते हैं "हम तो सिर्फ़ उस चीज़ पर ईमान लाते हैं, जो हमारे यहाँ (यानी बनी-इसराईल में) उतारी है।" इस दायरे के बाहर जो कुछ आया है, उसे मानने से वे इनकार करते हैं, हालाँकि वह हक़ है और उस तालीम की तस्दीक व ताईद कर रहा है जो उनके यहाँ पहले से मौजूद थी। अच्छा,उनसे कहो, "अगर तुम उस तालीम ही पर ईमान रखनेवाले हो जो तुम्हारे यहाँ आई थी तो इससे पहले अल्लाह के उन पैगम्बरों को (जो ख़ुद बनी-इसराईल में पैदा हुए थे) क्यों क़त्ल करते रहे?"तुम्हारे पास मूसा कैसी-कैसी रौशन निशानियों के साथ आया। फिर भी तुम ऐसे ज़ालिम थे कि उसके पीठ मोड़ते ही बछड़े को माबूद बना बैठे। फिर ज़रा उस मीसाक को याद करो जो तूर को तुम्हारे ऊपर उठाकर हमने तुमसे लिया था। हमने ताकीद की थी कि जो हिदायात हम दे रहे हैं,उनकी सख्ती के साथ पाबन्दी करो और कान लगाकर सुनो। तुम्हारे |

| | |
|---|---|
| "we have heard but we will not obey." So much was the love of that calf in their hearts due to their unbelief. Tell them: "If you are real believers, then why does your faith prompt you to do such evil things? Say O Muhammad: "If the Home of the Hereafter is exclusively for you and not for the rest of mankind, then wish for death if you are true in your claim! But they will never wish for death, because they are fully aware of the consequences of what they have sent before them for the Hereafter. Allah knows the wrong-doers. You will find them the greediest of men for life, even greedier than the *mushrikeen*, each one of them wishes to be given a life of a thousand years, but the grant of such a life will not save them from the punishment, for Allah is watching whatever they do. | अस्लाफ़ ने कहा कि हमने सुन लिया, मगर मानोंगे नहीं । और उनकी बातिलपरस्ती का यह हाल था कि दिलों में उनके बछड़ा ही बसा हुआ था। कहो! अगर तुम मोमिन हो, तो यह अजीब ईमान है जो ऐसी बुरी हरकत का तुम्हें हुक्म देता है। इनसे कहो कि अगर वाकई अल्लाह के नज़दीक आख़िरत का घर तमाम इनसानों को छोड़कर सिर्फ़ तुम्हारे ही लिए मखसूस है, तब तो तुम्हें चाहिए, कि मौत की तमन्ना करो, अगर तुम अपने इस ख़याल में सच्चे हो— यकीन जानो कि ये कभी उसकी तमन्ना न करेंगे, इसलिए कि अपने हाथों जो कुछ कमाकर इन्होंने वहाँ भेजा है, उसका इकतिज़ा यही है (कि ये वहाँ जाने की तमन्ना न करें), अल्लाह इन ज़ालिमों के हाल से ख़ूब वाक़िफ़ है। तुम इन्हें सबसे बढ़कर जीने का हरीस पाओगे, हत्ता कि ये इस मामले में मुशरिकों से भी बढ़े हुए हैं । इनमें से एक-एक शख़्स यह चाहता है कि किसी तरह हज़ार बरस जिये, हालाँकि लम्बी उम्र बहरहाल उसे अज़ाब से तो दूर नहीं फेंक सकती। जैसे कुछ आमाल ये कर रहे हैं, अल्लाह तो उन्हें देख ही रहा है। |

| **Tafsir** | |
|---|---|
| | |